

DPN

6244

~~प्रतिष्ठा यज्ञवल्ग्वर्चन~~ / PRATIṢṬHĀ YAJÑABHYARCAṆA

Title :

Run. No. 6935

Cat. No. 61

Micro. No.

Subject *Tāntrikakarmakāṇḍa*
Tāntrika ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Māith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 29 x 11.2

Folios 13

Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Fol. 1 a: ॐ अद्यादि ॥ यजमानस्य यथा प्रतिष्ठा यज्ञवल्ग्वर्चन वाक्य ॥

ॐ गुणवन्तमः ॥ या नः स्नानादिनिवृत्तकर्मकृत्वा ॥ यत्कर्ममुपादहन्नेर्मेत्यदिग्राह्यं आचार्यशिक्षित्वा ॥ सू-
यार्थ्यादयुक्ता ॥ ॥ मूलाचार्यादिस्तुयार्थ्यायुष्मत्तु ॥ गृहनामाकर्मवद्वलिद्वयं दद्यात् ॥ यजमानं
नललाटमिलकं कृत्वा ॥ निवसिष्यन्निष्पद्य ॥ जलाकर्मं गृहीत्वा ॥ ॐ अथादि ॥ यजमानस्य यथा यनिष्ठा यत्कृत्य
च न वा ॥ ॥ माहात्म्यकर्मणि ॥ ॐ सिद्धिं वसु ॥ मन्त्रिजादि ॥ दमासनः पादार्थं कृत्वा ॥ नमो मूलाचार्यादिभ्यो
सार्धं पादयुजा ॥ कृत्य वलिद्वयं दद्यात् ॥ ॥ गदा ॥ ॐ गं गदाय कथं वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ वदूका ॥ ॐ वूं वदूक
नाथं वलिं गृह्ण गृह्ण ०० ॥ कुरुयाल ॥ ॐ कूं कुरु यालाय वलिं गृह्ण २ ॥ रुहुकादि ॥ ॐ वूं रुहु
कादिभ्यो वलिं गृह्ण २ ॥ असिनाकादि ॥ ॐ वूं रुहु असिनाकादिभ्यो वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ वदूका ॥ ॐ वूं वदूक
दि ॥ ॐ वूं वूं वूं वूं ४ वदूका ॥ ॐ वूं वदूकादिभ्यो वलिं गृह्ण २ ॥ नवात्मा ॥ नैजं ॥ श्रीश्रीगणेशाय नमः
हे नववीराधियन्तयः सहस्रमलवन्तयः वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ नमो नमो बुद्धिः ॥ ॐ यं १० ॥ ॐ नं १० ॥ ॐ वं १० ॥

٩

ਦੁਨੀ

2

ऊर्ण ॥ उं कौं ह्रदयाय नमः ॥ ॐ ह्यादि कना न्यास सन्नेवाद्यया ययूजान् कान् वथन् ॥ उं म हा ३ ॐ न्वा व ऊ ह्र स धा
उ नी न म य च्छ उ हं उ या य्या य्या स्मान् द धि य अ व र्ण द्धि य ॥ स्नान ख ड्ग या ल्या ख न ग धू य न क थू ढा गु लि कू
ग का य ॥ ॥ पूर्व ॥ उं कौं मूं अं १ ॐ न्द्वी या य व लिं गृ ह्ण २ स्वा हा ॥ उं ग ल न नां त्वा ॥ ॥ अग्ने य ॥ उं कौं मूं कं
अ क ल न्द्वी या य व लिं गृ ह्ण २ स्वा हा ॥ उं अ म्ब अ म्बिक ॥ ॥ दक्षिण ॥ उं कौं मूं वं ज ना म व ल्द्वी ३
या य व लिं गृ ह्ण २ स्वा हा ॥ उं वि श्व न श्व कू नू ना ॥ ॥ नेर्मल्य ॥ उं कौं मूं टं ज ग रु ३
ह्र ०० ॥ उं द्यु नं द्यु न ॥ ॥ वायु ॥ उं कौं मूं नं ज ना ग द्वी या य ३ व लिं गृ ह्ण २ स्वा हा ॥ उं अ म्ब वा च द धि ॥
॥ वायु ॥ उं कौं मूं यं ज सो म्य द्वी या ३ य व लिं गृ ह्ण गृ ह्ण ०० ॥ उं उ रा धि व न म ॥ ॥ को व न ॥ उं कौं
मूं यं ग न्ध र्व द्वी या ३ य व लिं गृ ह्ण २ स्वा हा ॥ उं अ र्से र्वा ना ॥ ॥ ॐ न्म न ॥ उं कौं मूं ग ग वा नू त द्वी या य
३ व लिं गृ ह्ण गृ ह्ण स्वा हा ॥ उं न मा व लु ग्ग य ॥ ॥ मरु ॥ उं कौं ह्र स रु म ल व व यूं ३ कं को मा वी द्वी या य

वलिगृह्णस्वाहा ॥ उं नमामुसर्वथा ॥ उं धूम्रसिन्धु ॥ धूम्र ॥ उं नमोऽसिन्धु ॥ दीप ॥ नेवशादिदत्ता ॥ जय ॥ उं हरे ॥ १०
 ॥ स्फूर्णप ॥ ० ॥ उं नुद्योयकानवयविदिनसंगामुवल्गुमं दीपं गन्निगहस्मिन्नमपविर्दीपाधिकीनागकी ॥ यद्य
 सोम्यमथाष्टवातुलमर्दगन्धर्वकंसफर्म ॥ कीमागीनवर्ममुसंरूकमिदं दीपाधिर्यं नोम्यहं ॥ अरुगन्धदि ॥ अमुलवि
 सर्जनं ॥ मलुपयावाक्कायं ॥ पूर्वार्थवर्लिकययन् ॥ धानसुवातकवकाय ॥ न्निनवदीयवलिविधिः ॥ ॥ नगा
 हतशुद्धिः ॥ पालयानवकुलुवाकमनःस्वाहानं वदुर्थनं व ॥ नगाहमिन्नाधनं ॥ मलुपसंस्कारं ॥ कागन
 ॥ अरुदगा ॥ १८ ॥ उं ऊं अमुयरुट् ॥ उं नत्वायामिव ॥ सिद्धनं ॥ १ ॥ उं ऊं अमुलनिगीकुली ॥ २ ॥ उं ऊं कवचनता
 उनी ॥ ३ ॥ उं ऊं अमुलविन्नयय ॥ ४ ॥ उं ऊं अमुलवावाय ॥ ५ ॥ उं ऊं हृदयायनमः ॥ माथवनक ॥ ६ ॥ उं ऊं क
 वचमकुल ॥ सिद्धनं ॥ ७ ॥ उं ऊं अमुल ॥ कृटनी ॥ ८ ॥ उं ऊं कवचन ॥ लयनी ॥ ९ ॥ उं ऊं नगल ॥ मार्कनी ॥ १० ॥ उं ऊं
 कुलनिष्ठावन्तय ॥ ११ ॥ उं ऊं गन्धिकायनमः ॥ मध्या ॥ १२ ॥ उं ऊं गन्धेनमः ॥ पूर्व ॥ १३ ॥ उं ऊं विद्यायेनमः ॥ द
 क्षिण ॥ १४ ॥ उं ऊं पुनिष्ठायेनमः ॥ पश्चिम ॥ १५ ॥ उं ऊं निवृत्तिकलायनमः ॥ उत्तर ॥ १६ ॥ उं ऊं कवचाय ॥ उं हरे ॥

ऊं

रुमित्रसिद्धिदित्तिसिद्धिद्विधायाविश्वस्युवनस्यधृती ॥ पृथिवीयक्षुपृथिवीदृष्टपृथिवीमाहि ॥ ० सी ॥ ११ ॥ कृष्ण
 दकनसिद्धि ॥ उं ऊं अमुयरुट् ॥ उं कार्ष्णित्रसिद्धि ॥ १८ ॥ ॥ उं ऊं पृथ्वीनमः ॥ उं स्थानापृथिविना ॥ पृथ्वीस्वाय
 नी ॥ ॥ यथस्वायनी ॥ उं ऊं वथायनमः ॥ उं सफर्युजनिर्धमचक्रमकाअस्याहवतिसफधामाहनानिचक्रमजल
 यंतनाविश्वुवनानितस्य ॥ ॥ उं ऊं ऊं कवचायनमः ॥ उं वदासियनत्वं दववददवस्थावदाहवतनमः ॥ वदाह
 याह ॥ वदीस्वायनी ॥ कतन्त्रयकसी ॥ ॥ उं ऊं ऊं कवचाय ॥ उं लमग्नयुक् ॥ र्यवगथनासूरुली ॥ ॥ उं ऊं ऊं
 अमुयरुट् ॥ अर्धपाशादकनसिद्धि ॥ उं दवस्थला ॥ ॥ आसादयुजनी ॥ उं ऊं वास्त्राधियनयं वस्त्रालानमः ॥ उं
 यत्नामूरुमिवनूलास्ययागांस्तनलावस्त्रासवितासूकरशजतस्ययागोसूकरस्यलाकनिष्ठात्वासरुपस्याददमि
 ॥ पुनिष्ठा ॥ कलावयमपुयीरावयन् ॥ न्निमलुपसंस्कारविधिः ॥ ॥ अथजियुजनी ॥ ॥ ० ॥ ० ॥ वक्राम ॥
 ॥ वाहिदक्षिण ॥ लाजावाम ॥ उं ऊं गन्धिकाय अमुमूरुयदं रुट् ॥ उं वीहयन्वम ॥ वाहिदक्षिण ॥ ॥ उं ऊं पृथिका

दुमालीगिलावनशा नक्तनमृलिकंयाभ्यः शूलखटं च वामकः कृष्णगण महाकाला द्वात्रावेद्यावामकः ॥ वंद
 शां अस्मीन्नामदनायर्वतासा वरुहं रवन्तुहा सुजाखा ॥ यः स ० स नमुवनं धारियं यं नृं ऊं द्या अस्मा अ
 नुदवा ॥ ॥ सां ॥ उं यनासनसमावृत् कृष्णवर्णमहावली स द्वाविष्ट रं दर्वं महाकालं नमो मुने ॥ अ
 गन्मादि ॥ ॥ उं कां यनानाय २ ॥ वंद ॥ उं यान ४ यिनाक्षनात्रामानि वंद रुवनानि विष्णु यादवानी नामक्ष
 नकनवन ० रं यज्ञरुवनाय न्या ॥ ॥ उं कां निनिनाय २ ॥ उं लेनि वं द म रुना द वा मु य मि ० ॥ म म ना मु ना
 सत्यन व व नी कृ ० रु वि नि नु व या द धू ॥ उं कां रु ली का य न म ॥ उं रु रु व ४ ख ४ स य जा ४ य जा रि ४ स्या ० सू वी
 नावी ने ४ सू या घ षा षे ॥ उं कां रु व ला का य २ ॥ उं रु रु व ४ ख ४ यो वि व रु मा पृ थि वी रु ना न स्या रु पृ थि वी द व य
 जा नि षू अग्नि म ना द म ना आ वा द ष ॥ उं कां स सा मा य २ ॥ उं ० मं द वा अ ॥ उं कां जी गा ना य २ ॥ उं अग्नि मू र्धा
 ॥ उं अ न्व ता म २ ॥ उं वा क्त ल स ४ यि न न ॥ उं कां व ल य २ ॥ उं म ही शो ४ पृ थि वी च ॥ उं कां अ र्धा २ ॥ उं अं या य
 आ धा अ स्मा न् मा न न ॥ १

स्वा ॥ उं कां क वा य २ ॥ उं क वा सि पृ थि वी दृ ० रु कृ व क्षि द स्थि नि कृ द ० रु अ नु कि द सि दि वं द ० रु अ नु नी ष म
 सि ॥ उं कां ग रु ना य २ ॥ उं ० मं म व ॥ उं कां य मू ना य २ ॥ उं यं च न य ४ स न स्वा ॥ उं कां ० रु ना य २ ॥ उं वि ष्णु व रु न् ॥ उं
 कां क्ष रं २ ॥ उं उ दू र्जा न ॥ उं कां रु ग म य २ ॥ उं द श्या व धू र् ॥ य ग ॥ उं कां रु न यू ग म य २ ॥ उं अ रु ना जा य कृ न ॥ उं कां
 मृ ग्व द य २ ॥ उं अग्नि मी उ ॥ उं कां आ त्म रु त्वा य २ ॥ उं व द्म य रु नी ॥ उं कां वि ष्णु त्वा य २ ॥ उं ० द वि ष्णु ॥ उं कां
 नि व रु त्वा य न म ॥ उं न म ४ र्जा व या ॥ उं कां ग ल य न य २ ॥ उं ग ल ना त्वा ॥ उं कां स न स्व र् २ ॥ उं या व का न ॥ उं कां
 म हा ल क्ष्मी २ ॥ उं जी ष्णु ॥ उं कां रु त्पू न्वा य २ ॥ उं य त्पू न् र्ष द धू ॥ उं कां कू मू द य २ ॥ उं अ स्मा क मि नु ॥ उं रु द
 म्ब न क ॥ ॥ उं लो ० रु ना य २ ॥ आ वा रु न ॥ उं न अ हि स व मि न सि द्ध सा क्षी ॥ न रि ष्णु ना व रु ध ना म न ग न सी वी
 सु मा ल य २ ॥ ॥ सां ग र्दान ॥ न का क्ष रं ना रु ग व न्न म रु ॥ ॥ आ नी ॥ उं ले ना व न ग जा नू र् ॥ रु म व र्ण कि
 नी नि नी स रु म न य नं र्जा व रु या नि वि रु व थ रु ॥ उं कां लो ० रु ना य व रु रु स्मा य सू ना धि य न थ ग ज
 वा रु ना य ध्या न यू र्ष २ ॥ वंद ॥ उं ज ना न मि नु ॥ सां ॥ ० रु ४ ॥ सू न य नि षे व व रु रु स्मा म हा व ल १ ग न
 ४ ॥ १ ॥

१

॥ २ ॥

॥ भैर्वत्सल्यवावृत्तात्तयगामगृहीतासिमङ्गलाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

यि ध्या न्मि कृ ४ क कट म नू म लो य निष्कृ त्वा ये च कु वा क ४ ॥ उं धृ न थ श ॥ उं वि धृ नि नू य निष्कृ दृ ह स्य न ना धि य स्य
 उ जा म दा द्वि त्व स्मा मा ना स्मृ त्वा स्या दि म ना त्र ग्ध सि ॥ उं कं न म दा ये श ॥ उं आ पा द वी यु नि गृ क्ता न न स्मे न स्था न कृ
 लू ध ० सूल रा द ला क ॥ न स्मे न म नां ऊ न य ४ सू य ती र्मा नं व यू र्णं वि श्रु ना स्य न न ॥ उं कं स न य वं श ॥ उं धृ नं न नी ना
 म धू ना स म अ नी वि त्वे दं वं न लू म ना म नू रि ४ उ ऊ स्त्र नी य य सा धि सू मा न सा स्मा स्मी नं य य सा त्वा व त्वृ त्वा ॥ उं कं
 नि गू ला य श ॥ उं नू य न व सूर्य ॥ उं कं यू धू श ॥ उं आ न वृ ङ हि ॥ उं कं मि ना य श ॥ उं य द य क च ॥ उं कं व नू त्ता य
 श ॥ उं न त्सूर्य ॥ उं कं नू ना यू मा य श ॥ उं अ कू ना जा य कृ ॥ उं कं य कू वं दा य श ॥ उं वृ त्वा ऊ ॥ उं कं आ त्म न त्वा य
 श ॥ उं व सूर्य कू नी ॥ उं कं वि श्रा न त्वा य श ॥ उं वृ दं वि कृ ॥ उं कं नि व न त्वा य श ॥ उं न म ४ र्णी र वा य ॥ उं दू म्ब नि क ॥
 उं कं ग द य न थ श ॥ उं ग द्मा नी त्वा ॥ उं कं स न स्र ह्ये श ॥ उं या व का न ॥ उं कं म हू ल क्षी र ॥ उं शी श्र न ॥ उं कं य मा य
 वृ द मा स नं श ॥ यू र्ण श ॥ आ वा द न ॥ उं न अ दि वे व स्र न ध र्म ना ऊ स व म ने त र्जि न ध र्म मूर्त्ति ॥ गुरा गुरा न न्द गु
 वा म धी र्ग नि वा य न ४ या दि म र्ख न म स्म ॥ ॥ ध्या नं ॥ उं कृ ना नं म दि षा नू रं द लु र्म र्म र्म ना न कं ॥ काल या ग ध र्म

कालं ध्यायद्दक्षिणदिक्कनि॥ॐ कं यं॥ य मायदलुरुक्ताय महिषासनाय यथाधियनयनमः॥ वद॥ॐ य
 मंनदलं॥ स्तुतं॥ॐ दलुरुक्ताय मा धू दवा धर्माधिका महावल॥ कालं नृपध्यानिर्णय धर्मराजन मासुनं॥
 अरुगन्मादि॥ॐ कं निवतुत्ताय॥ॐ निवाना मासि॥ॐ कं कूं न अथात्राय॥ॐ यानं नृप॥ यन्त्रव॥ॐ कं कं कव
 वाय कूं यन्त्रवमालाये॥ॐ अन्वसुयत्रागा॥ॐ कं यं यलुनीकाय॥ॐ यन्त्रानन॥ॐ कं दलुरुक्ताय॥ॐ कूं रु
 द्धाय॥ॐ वृहस्पतं नृदिनसि॥ॐ कं रु॥ अन्माय रुद्र॥ निवृज॥ॐ य वृक्ष वृ॥ॐ कं रुद्रयाय एममयाय॥ॐ
 गन्धर्वा॥ॐ कं कं कववाय कूं दूवाये॥ॐ कालुत्कां ठा॥ॐ रु॥ अन्माय रुद्र॥ सर्वथा॥ॐ मा नृदाय॥
 ॐ कं कववाय कूं यं वसुधाय॥ॐ नकारुनी॥ॐ रु॥ अन्माय रुद्र॥ नृकाये॥ॐ नृका॥ॐ त्वं जविष्टदा॥ चन्द्रनादि
 वलि॥ॐ कालागिर्यग्निवमाला॥ अलुम्ववृक्षुया॥ कोमात्री गन नृदाय॥ यथा मयि नि संक्षिप्ता॥ न सर्वसि
 दवस्था वलि गृह्णतु न सदा॥ॐ कं सुयनिषा रुवाय॥ॐ यं नयं नृका॥ धूय॥ॐ धूवसि॥ दीया॥ॐ न जासि॥ रु

८

ली॥ॐ यारुलिनी॥ अनी॥ॐ अन्नयनन॥ युनिष्ठा॥ॐ मना दूनि॥ जायस्तु॥ॐ चलु॥ यचलु दवश्च॥ हं गी गलयनिः
 स्तुथा॥ॐ नायुगाय रु द्रं दकावनी सत्रयूस्तथा॥ वृक्षवृहस्पतिर्येव॥ चलु॥ का धस्तु येवच॥ कोमात्री वैष्णवी
 कि॥ द्वात्राक्षि मिदवना॥ वनाहाध्यात्र वकुथ॥ द्वात्रमश्च रुना नृका॥ यनाकाक्षज रुद्रादि॥ सर्वदवश्च वलि
 रु॥ विद्यादात्र समाष्टुय॥ मानमामिसमस्तु कान्॥ महावीर्या महाकाया॥ हिना अन्नसमय रु॥ नृदानं क्षिणं
 ली॥ केला नृत्तं सूरारुनी॥ॐ दवदानव॥ॐ अर्थत्रय रु॥ पूर्ववृ॥ यजमानस्य॥ अमूककार्य॥ अरुनायुयज्ञान
 रुकर्मणि॥ दक्षिणदात्रा नृनिवि॥ अरुगन्धयूय धूय दीया नृनिवि॥ धनं सर्वविधियत्रि यूर्तुमस्तु॥ वृनिदक्षिणदा
 ना नृनिविधान॥ २ ॥ ॥ नृयन्त्रिमदात्रा नृनी॥ॐ कं अन्वत्ताय॥ न्यास॥ॐ यूजा॥ॐ रुद्रं विष्टु॥ॐ नृत्ता
 यामि॥ॐ स्थानायुधिवि॥ॐ द्वात्रादवी॥ॐ चत्वारं गं॥ॐ कं निवृक्षिदात्राय॥ॐ कं वत्रनात्रमाय॥ॐ वृषा
 य॥॥ ध्यानं॥ॐ रुद्रं कव कूं चतुर्वर्द्धं॥ गोत्रवर्द्धं वृषाननी॥ अरुमाला विष्टुर्लव॥ वत्रदारुयया निनी॥ वद॥ॐ

कां२

येनुवाजीकनिकुदंनानरुडासमयत्वाहारुत्रग्नियूनीश्यामायायायूषयूत्रावृषाग्निवृषदीरुनरुनया
 ० समुदियअग्नायादिवीनया॥स्कारु॥उं॥स्वनाकुल्लहिमारुचयन्मि मद्यानदक्रिणासर्वयष्टिकनंदव
 वृद्धनूयनभाभुन॥अगगन्मादि॥ ॥उं॥कांस्वन्दायश॥स्कारु॥उं॥कवकुंजिनर्चत्रकवर्द्धनययुर्
 असिवर्जंनथासकिं॥स्वदघर्णत्रकूट॥षडुर्जमयूत्रावृष्टं॥वामकदात्रवामकास्वन्नुययउद्व
 गेनीयूषंमूकजसं॥वदश॥उं॥यदस्वन्दाय॥स्कारु॥उं॥मद्यनादासनस्वचत्रकवर्द्धमहाशूर्तिमनुसि
 द्वियदाननी॥स्वन्मूर्तिनमाभ्यदी॥अगगन्मादि॥ ॥उं॥कांस्वन्दायश॥उं॥स्वनायत्वानावायस्व
 त्रिविष्टुर्ब॥०॥रुकीद्वयष्टियुधियामूर्ध्वनत्रिकुमन्मियुधियात्वानाहोसादयाम्यदित्याउयस्वग्नेरुशु०
 त्रक॥उं॥कां॥अमृगसंजीविनीश॥उं॥का॥हृत्का॥हृत्॥उं॥कां॥जनलाकायश॥उं॥रायेदावृहिनयरायाग्नेर्ध्वष्टस्य
 विष्टयायाहिषकावृत्रिविष्ठायानाकाययत्रिवंशानंदवलाकाययसिगानंमनूष्यलाकाययकविगात्र०स

वृथांलाकय०उयसिकात्रमवअकोवृष्मथायत्रिमन्त्रिगानंमधायवृषसयत्रयूनीनयकाभायत्रजयिनीन॥उं॥कां
 नयालाकायश॥उं॥नययुनयस्यश्रुनेनित्रावृष्टअग्नेत्रक०स्वयासिकल्पनीयावोयुधिवीकल्पनामायउवमय
 ०कल्पनामनय०युधकूमश्रुयायसवताशयअग्नेय०समनसाकत्रायावायुधिवीरुमा॥नेनित्रावृष्टअग्निः
 कल्पमाना००॥मिवदवाअहिसचिगनुनयादवाकयाक्रिस्वक्वसीदम॥उं॥कां॥हृत्कायश॥उं॥अनात्यविष्ट
 नात्रसी॥उं॥कां॥ननेश्वरायश॥उं॥ननादवीत्रा॥उं॥कां॥विष्ठावत्तायश॥उं॥त्रकसीरागासि॥उं॥कां॥कृपायश॥उं॥अय०
 सरुमा॥उं॥कां॥नलायश॥उं॥अमृगम०युविर्सीनिजसीरुतिमूयागनिगनाहृय००॥वर्गनंनयउसीरुत्या००॥वना॥उं॥
 कां॥अनलायश॥उं॥वसूत्रम०वसनिष्टम०कर्मत्रम०गकिष्टम००॥रथयम००॥हृत्गनिष्टम०य००॥नकल्पनी॥उं॥कां
 रगमहेश॥उं॥नदीय०यो॥उं॥कां॥चन्द्ररागयेश॥उं॥समेदत्वानमनाअस्वन्नृचका००॥धदिवाअग्नेउद्धनारुनी
 यत्वात्रजसि०रुक्मिवा००॥समयामूयस्वमहिषाअवर्द्धम॥उं॥कां॥हिमूलायश॥उं॥अयन००॥वसूय॥उं॥कां॥सामायश

॥ॐ नमि नमः व नमः स्याति च क स्यात्त्रयं स्यादि ॥ॐ ऊं य मा य श ॥ॐ व नमः ॥ॐ अ सि ॥ॐ ऊं व स या य श ॥ॐ म
 का द वा ना म ॥ॐ ऊं दाय न य ग य श ॥ॐ अ क ना जा य श ॥ॐ ऊं सा म व दाय श ॥ॐ अ न आ या दि ॥ॐ ऊं आ त म
 ला य श ॥ॐ व स य स नी ॥ॐ ऊं वि द्या न ला य श ॥ॐ ॐ द वि ष् ॥ॐ ऊं नि व न ला य श ॥ॐ न म ॥ॐ र वा ॥ॐ दू म्ब नि क
 ॥ॐ ऊं ग ल य न य श ॥ॐ ग ल नी ला ॥ॐ ऊं स न ख ले श ॥ॐ पा व का न ॥ॐ ऊं म ह ल ॥ॐ ॐ धी ध न ॥ॐ ऊं व
 न ल य न म ॥ ॥ आ वा रु नी ॥ॐ न अ दि या दा ग ल वा वि धी नी ग ल न य य न्य स हा य न्ना रि ॥ वि द्या ध न्ना
 म न गी य मा न या दि त्व म स्मा न रु ग व न्म ॥ ॥ अ नी ॥ॐ ना ग या न ध र रु ल व ली य य नि वि ग र्ग न
 क ध व ली अ य द न र्ग म क वा स नी ॥ॐ ऊं व न ल य य न रु ला य ज ला धि य न य श ॥ व द ॥ॐ ॐ म म व
 न ल ॥ॐ ऊं ॥ ना ग या त्म का नि ॥ॐ ऊं नि व न ला य श ॥ॐ नि वा ना मा सि ॥ॐ ऊं ल स या जा ना य श ॥ॐ स
 या जा ना ॥ॐ ऊं ऊं क व वा य दू य ल व मा ला ये श ॥ॐ अ न्ध सू य ना ग्ना ॥ॐ ऊं सा र्ग क क दू य श ॥ॐ अ स्मा क

१०

मि ल ॥ॐ ऊं ना ग या न्ना य दू र ॥ॐ वृ ह स्य न क्कु दि न ॥ वृ ॥ॐ अ वृ क य ॥ नि वृ ॥ॐ ऊं ह द या य श ॥ ग म य ॥ॐ ग
 न्ध वा नी ॥ दू व ॥ॐ ऊं क लु न्का ॥ॐ ऊं क व वा य दू ॥ॐ ऊं अ स्मा य रु ॥ॐ ॐ मा नू दाय ॥ न का य का ॥ॐ ऊं क व वा
 य दू ॥ सूर ॥ॐ व क्का रु न व ॥ व क्का ॥ॐ ल व वि ष् ॥ च न ना दि व लि ॥ॐ अ य नी च क ला ली च ॥ उ न रु व दू क य श वा
 ना र्ही ग ल नू दाय व नू द दि नि स लि ना ॥ न स र्व स नु द व स्या व लि गृ क नु न स दा ॥ॐ ऊं स य नि ष्ठा रु वा य श ॥ॐ य
 न र्थ आ स ॥ ॥ धू य ॥ॐ धू व सि ॥ दी य ॥ॐ न अ सि ॥ रु ली ॥ॐ या रु लि नी ॥ अ नी ॥ॐ अ न य न न ॥ य नि ष्ठा ॥ॐ म ना दू
 नि ॥ ॥ जा य ॥ॐ ऊं ॥ अ उ वि ष् ॥ का ये व वृ यं ल न रु थे व व ॥ सा म व दाय न य ग लु वी की नि की न था ॥ॐ उ
 ना व वि ष् ॥ क वा ली रे व व रु था वा ना र्ही ये व मि ला नी द वा द व वि द व ना ॥ स या जा न य क यि ल ॥ या नी द
 व स्य म अ क य ना या अ उ क ग य स र्व द व स मा नि ना ॥ नि र्बु लि द वा न मा लि ष् ना न मा मि स म रु का न ॥ म हा वी था
 म हा का य ॥ सूर व सूर स द ग य नि ष्ठा न रु द वा नि न ले ली ना म्ना ली ग न्ध मा द नी ॥ द व दान व ॥ अ य च य रु ल व नि ष्ठा
 व ॥ य रु मा न स्या म क का य ॥ अ हा ना य रु न र्क म मि य नि म द वा न र्ज न वि धि ॥ अ रु ग न्ध दि ॥ॐ नि य नि म द वा न र्ज

नविष्मन् ॥ ३ ॥ ॥ न न उरु न द्वां च न ॥ ॐ कं प्र कृ वृ का य न म ॥ न्या सा दि ॥ ॐ ॐ दं विष्म ॥ ॐ न त्वा या मि ॥ ॐ स्था ना
यु धि वि ॥ ॐ द्वा मा दं वी ॥ ॐ च त्वा वि ष्म ॥ ॐ कं य नि ष्ठा क ला द्वा ना य श ॥ ॐ कं आ वा ग्म ना व लो य श ॥ ॐ कं अ न का स य
श ॥ ॐ कं दं वी श ॥ ॥ श्री न ॥ ॐ सिं हा स न स्ति ना द वी यी न व र्ण च रु र्जु ना उ त्प ली गू ल द क च द प्य ली या उ वा म क
व द ॥ ॐ दं वी ति मु ष्मि आ दं वी त स्य न्द स न स्व नी स सू ख नू म श्री ना त्या मि त्वा य द धू त्रि लि यं व सू व न व स्र म्भ स्य यी
तु र्य ज ॥ श्री ॥ ॐ ह त्रि यु सं द्यो ना द वी यी न व र्ण सू यो व ना ॥ ॐ क्वा सि छि रु ली दा नी दं वी नू य न मा मु न ॥ अ ऋ ग
भा दि ॥ ॥ ॐ कं च लु य श ॥ श्री न ॥ ॐ कृ षू ष्व रु म्भ ख मु क्क ष्व लु षू क्क कृ षू ष्व ना नू ली क म लु ली वा म द्वा धु च म्भ
दि रु ष ल ॥ व द ॥ ॐ य त्थ मा वा र्च क त्या ती मा व दानि ज नं त्य ॥ व षू ना ज न्या त्या ० नू दाय चा यि च स्वा य चा व
ला य धि या द वा नां द कि ष्म यि द रु त्रि रु ह या स म की स म मृ ष्म रु मू य मा दान म नु ॥ श्री ॥ ॐ यी ना रु न ल सै य क
कृ षू व र्ण सू न ज सै स व सि छि य दा ना र्च लु मू र्ति न मा म्भ ॥ अ ऋ ग भा दि ॥ ॥ ॐ कं ध न दा य श ॥ ॐ अ या अ या न व
वि ष ० व स न स म सृ ग्म दि य य स्वा न ग्न आ ग म नं मा स ० सृ ज व र्च सा य ज या च ध न न च ॥ ॐ कं दी य दा य श ॥ ॐ दी

वत्संगीसमावाग्यं यवमानं महीयनं वा न्यधनं वसूयुलारुं गनसंवत्सवं दीर्घमायूः ॥ उं ऊं सत्यलाकायश ॥ उं स
विभुत्वायस ॥ उं ऊं कुवायश ॥ उं कुवमसिष्टुधिवीन्द्रुं रुवम्वनिताकृण्वनिसजानवच्युयदधमिजानुश्रुत्यवधाय ॥ उं
ऊं वाहवश ॥ उं कयानश्रिज ॥ उं ऊं कं कं वश ॥ उं कं कं क्वी ॥ उं ऊं य वधुनामायश ॥ उं युजायनन ॥ उं ऊं मार्कलुयाय
नमश ॥ उं सयवय ॥ उं ययूयायश ॥ उं यानत्रग्नियानत्रिन्द्रुं रुवामरुयानमिजानवत्ता ॥ यानत्रग्नियानत्रिन्द्रुं
॥ युवनीवधुनस्यग्नियान ॥ साममूँ नूड ॥ रुवम ॥ उं ऊं युहासायश ॥ उं वसूचमं वसुनिष्ठमं कर्मचमं नकिष्ठमं
यश्चमं नमश्चमं ॥ ह्याचमं गनिष्ठमं यरुं न कल्पनी ॥ उं ऊं गनुश्रुश ॥ उं सनाथा ॥ श्वेवत्रमूयकावनाथादादासंवे
सनाथावेदं नक्षलाय ॥ स्तोत्रं वयात्रायमागत्रमवात्रायकवर्तुने ॥ रथ्याज्जदविषमथावेनालीखनस्याजम्कयव
नेत्य ॥ किंयूवू ॥ उं ऊं कोनिश्रुश ॥ उं समूडादूर्मिमधूमा ॥ उं दात्रदूया ॥ नुनाममृगस्यमान ॥ दृगस्यनामगुर्ग्ययद
स्तिजिह्वानाममृगस्यनालि ॥ उं ऊं सविश्रुश ॥ उं अर्थन ॥ वसूय ॥ उं ऊं लक्ष्म ॥ उं अयादवाउदिन ॥ उं विश्वक्कनायश ॥

١٢

[illegible]

॥ नमः आग्नेयदात्रयूजा ॥

१३